ISSN No : 2581-6306 website : http://shisrrj.com
Impact Factor : 5.239

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal

Certificate of Publication

Ref : SHISRRJ/Certificate/Volume 5/Issue 3/827 30-May-2022

This is to certify that the research paper entitled

विद्यापतिक जीवन–वृत्त आ रचना

राजीव कुमार झा
शोधार्थी, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ

After review is found suitable and has been published in the Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal(SHISRRJ), Volume 5, Issue 3, May-June 2022. [Page No : 129-142]

This Paper can be downloaded from the following SHISRRJ website link

https://shisrrj.com/SHISRRJ225468

SHISRRJ Team wishes all the best for bright future

Editor in Chief
SHISRRJ

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Associate Editor
SHISRRJ

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

97

विद्यापतिक जीवन–वृत्त आ रचना

राजीव कुमार झा
शोधार्थी, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ

Article Info
Volume 5, Issue 3
Page Number : 129-142

Publication Issue :
May-June-2022

Article History
Accepted : 01 May 2022
Published : 30 May 2022

मैथिली साहित्यक तोरण द्वार पर स्वर्णाक्षरमे अपन नाम अंकित करौनिहार– महाकवि विद्यापति भारतीय कवि परम्पराक शालीनताक निर्वहन करैत, अपना विषयमे किछु नहि लिखने छथि। प्रारंभमे बंगाली विद्वान लोकनि हिनका बंगलाक कवि मानैत छलाह मुदा बादमे राजकृष्ण मुखोपाध्याय हिनक परिचयकेँ सौझरौलनि आ डॉ॰ ग्रियर्सन हिनक पूर्वज लोकनिक परिचय प्रकाशित कयलनि। विद्वान प्राध्यापक, समीक्षक, साहित्यकार डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन झा लिखने छथि– "सर्वप्रथम राजकृष्ण मुखोपाध्याय 1875 ई॰मे बंग दर्शन (ज्येष्ठ अंक)मे विद्यापतिक मैथिलत्वकेँ प्रमाणित क' हुनक अधिवासक समस्याकेँ सोझारौलनि। पश्चात डॉ॰ ग्रियर्सन एकर समर्थन कयलनि आ मिथिलाक पंजीक अनुशीलन क' अपन 'मैथिली क्रेस्टोमैथी (1882 ई॰) नामक ग्रंथमे विद्यापतिक प्राक्तन सात पुरुष ओ अधस्तन बारह पुरुषक नामावली प्रकाशित कयलनि।"[1]

मैथिली भाषामे लिखल मैथिली साहित्यक प्रथम इतिहासकार डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखने छथि– "विद्यापतिक जन्म गढ़ बिसपफीक शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यान्दिन शाखाक काश्यप गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण परिवारमे भेल। एहि वंशक बीजी पुरुष छलाह विष्णु ठाकुर।"[2]

कोनो विद्वान वा मनीषीक काल (जन्म, मृत्यु) निर्धारणमे तीन आधारक आश्रय लेल जाइत अछि– अन्तः साक्ष्य, बहिः साक्ष्य एवं जनश्रुति। विद्यापतिक काल निर्धरणमे एहि तीनू तत्वक आश्रय लेल जाइत अछि। अन्तः साक्ष्यक अन्तर्गत हुनकर रचित ग्रन्थ, बहिः साक्ष्यक अन्तर्गत समसामयिक अन्यान्य–ग्रंथ आ जनश्रुतिक (किंवदंती) अन्तर्गत कहल–सुनल बात अबैत अछि। जेना कि पहिने चर्च भऽ चुकल अछि जे ओ अपना विषयमे विशेष किछु नहि लिखने छथि मुदा हुनक लिखल किछु ग्रन्थक आधारक आश्रय एहि दिशामे सहायक सिद्ध होइत अछि।

1. विद्यापतिक हस्तलिखित भागवतक अन्तमे लं॰ सं॰ 309क उल्लेख अछि।
2. विद्यापतिक सनदमे लं॰ सं॰ 293क उल्लेख अछि।
3. लं॰ सं॰ 252क लगभग (जखन गणेश्वरक मृत्यु भेल) विद्यापति कीर्तिलताक रचना कयने छलाह।
4. लिखनावली संभवतः 299 लं॰ सं॰मे लिखल गेल।
5. देवसिंहक मृत्यु लं॰ सं॰ 293मे भेल आ ओहि वर्ष राजा शिवसिंहक राज्याभिषेक भेल।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखने छथि – "अपन अवहट्ठक निम्नलिखित गीत– पंक्तिमे देवसिंहक तिथि तथा म॰ शिवसिंहक सिंहासनारुढ़ होएबाक तिथिक स्पष्ट उल्लेख विद्यापति कएने छथि–

"अन्ल रन्ध्र कर लक्खन णखइ सक समुद्द कर अगिनि ससी

चैत कारि छठि जेठा मिलिओ बार बेहप्पइ जाए लसी।"

एकर अनुसार ओ तिथि छल लं॰ सं॰ 293क चैत्रा वदि 6, जखन चन्द्रमा ज्येष्ठामे छलाह आओर दिन मंगल। एहिमे लं.सं.क संग–संग शक–संवतक उल्लेख सेहो छैक 1324 अर्थात 1402 ई॰"[3] मुदा ई महाकविक तिथिक निर्णयक आधार प्रमुख रूपसँ जनश्रुतिकेँ मानने छथि–

"विद्यापतिक जन्म–तिथि–निर्णय परम्परासँ प्रसिद्ध श्रुतिक आधारे पर करए पड़ैत अछि, कारण अपन तिथिक उल्लेख विद्यापति कतहु नहि कएने छथि आ ने कोनो कवि अथवा विद्वाने कएने छथि। जनश्रुतिक धार पर विद्यापतिक प्रसंग चन्दा झा 'पुरुष–परीक्षा'क अनुवादमे लिखने छथि जे विद्यापति म॰ शिवसिंह सँ दू वर्ष छलाह। राज्यारोहणक समय म॰ शिवसिंहक अवस्था छल 50 वर्षक, तैँ विद्यापतिक अवस्था छल 52 वर्षक। 3 लं.सं॰ अथवा 1324 अथवा 1402 ई.मे विद्यापतिक जन्म तिथि निश्चित होइत अछि। डॉ॰ सुभद्र झा, प्रो॰ रमानाथ एवं शशिनाथ झा सेहो इएह तथ्यकेँ मानैत छथि किन्तु डॉ॰ उमेश मिश्र ओ डॉ॰ जयकान्त मिश्र हिनक जन्मतिथिकेँ स्वीकार करैत छथि 241 ल.सं॰ (1360)। हुनका लोकनिकेँ अवहठ्टक पद दिसि ध्यान नहि गेलैन्हि अछि आओर यः तैँ किलहार्नक मतानुसार लक्ष्मण संवतक आरम्भ 1119 ई.सँ मानैत विद्यापतिक जन्मतिथि 1360 ई॰ मानैत छथि।"[4]

भारत सरकार द्वारा जारी डाक–टिकटमे सेहो हिनक जन्म 1360 ई॰ अंकित अछि। हिनक मृत्यु–तिथि–निर्णय अपेक्षाकृत बेसी फरिछांयल अछि। विद्वान लोकनिक मत अछि जे म॰ शिवसिंहक राज्यकाल 3 वर्ष 9 मास धरि रहल अर्थात लं॰ स॰ 296क पूस मास धरि ओ राजा छलाह। तत्पश्चात् मुसलमान आक्रान्तासँ युद्ध करैत युद्धभूमि सँ नहि घुरलाह आ लापता भऽ गेलाह। बारह वर्ष धरि पतिक प्रतीक्षा कयलाक पश्चात रानी लखिमा सती भऽ गेलीह। महाराज शिवसिंह 1402 ई.मे राज्यासीन भेलाह आ मुसलमानक संग हुनक युद्ध 1406 ई.मे भेल। अतः लखिमा देवी सती 1418–19 ई.मे भेलीह। महाकवि विद्यापतिक एकटा पद भेटैत अछि– संपन देखल हम शिवसिंह भूप। बत्तीस बरस पर सामर रूप। 'ब्रह्मवैवर्त पुराण'क अनुसार कोनो मरल व्यक्तिकेँ स्वप्नमे देखलाक बाद जँ स्वप्न रातिक पहिल पहरमे देखल जाय तँ एक वर्षमे दोसर पहरक आठ मासमे, तेसर पहरक तीन मासमे आ चारिम पहरक स्वप्नमे 15 दिनमे स्वप्नद्रष्टाक मृत्यु भऽ जाइत अछि। तदनुसार आठ मासमे (लं.स॰ 329मे) विद्यापतिक मृत्यु भेल। हिनक एकटा पद भेटैत अछि– "विद्यापतिक आयु अवसान। कार्तिक ध्वल त्रायोदशी जान।"

तैँ इएह तिथि 329 लं॰ सं.क कार्तिक शुक्ल त्रायोदशीकेँ विद्यापतिक मृत्यु भेल। जन्म तिथिक निश्चित ज्ञान नहि रहला सँ महाकवि विद्यापतिक जयन्ती एहि तिथिकेँ मनाओल जाइत अछि। डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' हिनक मृत्यु वर्ष 1439–40, डॉ॰ सुभद्र झा 1448 सँ 1461 धरि, डॉ॰ उमेश मिश्र 1446, डॉ॰ जयकान्त मिश्र 1448,

शशि... झा 1450 एतेक धरि निश्चित अछि जे ई दीर्घजीवि भेल छलाह। सम्पादक द्वय रामदेव झा आ मोहन भारद्वाज साहित्य–अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'विद्यापति–गीत संचय' नामक पोथीक प्राक्कथन (पृ.–8)मे कहने छथि– 'विद्वान लोकनि विभिन्न प्रमाणक आधार पर हुनक जीवनकालक सम्बन्धमे विचार कयलनि अछि। एहिमे मत–वैभिन्य विशेष देखल जाइत अछि। सामान्यतः विद्यापतिक स्थिति काल 1360 ई॰सँ 1440 ई॰ धरि मानल जाइत अछि। एहिमे दस–पाँच वर्षक आगाँ–पाछाँ अन्तर होयब सर्वथा सम्भव अछि। एतबा निश्चयपूर्वक कहल जा सकैत अछि जे विद्यापति चौदहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध ओ पन्द्रहम शताब्दीक पूर्वाद्ध (1350–1450)मे अवश्ये विद्यमान छला।'

विद्यापतिक जन्म बिसफी नामक गाममे भेल छल। बिहार राज्यक वर्त्तमान दरभंगा कमिश्नरीक प्रसिद्ध जिला अछि मधुबनी जे उक्त कमिश्नरीक एकदम उत्तरी भागमे अवस्थित अछि। कमिश्नरीक मुख्य स्थान दरभंगा सँ रेलवे लाइन तीन दिसि गेल अछि– एक पश्चिमोत्तर दिसि, दोसर पूब दिसि आ तेसर दक्षिण दिसि। पश्चिमोत्तर दिस गेल लाइन पर कमतौल नामक एकटा स्टेशन अछि जे दरभंगा सँ लगभग चौदह मील पर अवस्थित अछि। एहि स्टेशनक उत्तर–पूर्व दिशामे लगभग पाँच मीलक दूरी पर महाकवि विद्यापतिक जन्मभूमि 'बिसफी' वा गढ़ बिषपी बसल अछि। ई गाम वर्त्तमान मधुबनी जिला सँ पश्चिम बिसफी थानान्तर्गत जरैल परगनामे अछि। बिसफीकेँ कतेक गोटा गढ़ बिसफी सेहो कहैत छथि तकर प्रधान कारण ई अछि जे पंजी प्रबन्धमे बिसफीक संग ईहो नाम आयल अछि। नगेन्द्रनाथ गुप्त आ रामवृक्ष बेनीपुरीक मत छनि गढ़ बिसफी बिसफीयेक पुरान नाम हो। विद्वान लोकनिक कहब छनि जे प्राचीन बिसफी वा बिसफी गाममे अनेक टोल छल आ जाहि टोलमे विद्यापति जन्म लेलनि ओ गढ़ बिसफी नाम सँ जानल जाइत छल। बिसफी बहुत पैघ गाम छल जे लगभग चारि कोसमे पसरल छल। मिथिलामे एहि गामक विषयमे कहल जाइत छल जे 'बीसा सए हर बिसफी बहए तइयो बिसफी पड़ले रहय। किछु विद्वानक मत छनि जे विद्यापतिक पूर्वज पहिने 'बिसइबार' नामक गाममे रहैत छलाह जे बादमे निकटमे स्थित बिसफी गाममे स्थायी रूप सँ रहय लगलाह। हिनक वंशज वर्त्तमानमे सौराठ गाममे रहैत छथि। हिनक वंशज 'एकनाथ ठाकुर' अपना पिता पं॰ तुला ठाकुरक निधनक बाद सौराठ गाममे बसि गेल छलाह जतय हिनका लोकनिक सात सय बीघा खेत छलनि। ओना तँ म॰ शिवसिंह बिसफी परगना महाकवि विद्यापतिकेँ दानस्वरूप दऽ देने दलथिन। डॉ॰ श्रीश लिखने छथि– "म॰ शिवसिंह द्वारा विद्यापतिकेँ प्रदत्त बिसफी गामक ताम्रपत्रामे लं॰स॰ 293क श्रावण शुदि 7 मंगल दिन लिखल छैक।"[5]

बाल्यकाल :– महाकवि विद्यापतिक बालावस्थाक संबंधमे कोनो प्रमाणिक विवरण नहि भेटैत अछि मुदा विद्वान लोकनिक मानब छनि जे ई बाल्यावस्थहिसँ अत्यन्त कुशाग्र बुद्धिक छलाह। हिनक पिता गणपति ठाकुरक संबंधमे आचार्य रमानाथ झाक कहब छनि जे ओ एक सामान्य व्यक्ति छलाह, मुदा किछु विद्वान लोकनिक मत छनि जे ओ 'कुल चिन्तामणि' एवं अन्य पोथीक संग–संग किछु मैथिली पदक रचना सेहो कयने छलाह। विद्यापति बाल्यकालसँ पिताक संग गणेश्वर राजाक दरबार जाइत छलाह। म॰ म॰ हरि मिश्र हिनक अध्यायक आ म॰ म॰ पक्षधर मिश्र हिनक सहपाठी छलथिन जे अवस्थामे हिनका सँ छोट छलाह।

(44)

उपाधि :– "महाकवि विद्यापतिक निम्नलिखित उपाधि कहल जाइत अछि– अभिनव जयदेव, महाराज पण्डित, सुकवि कण्ठहार, सरस कवि, कविकण्ठहार, कविवर, सुकवि, नव जयदेव प्रभृति।"[6] अभिनव जयदेव तँ बिसफीक ताम्रपत्रामे सेहो लिखल अछि।

सम्प्रदाय :– महाकवि विद्यापति अनेक भाव–बोधक कविता लिखलनि। किछु विद्वान हिनका शृंगारिक तँ किछु भक्त कवि मानने छथि। हिनक धार्मिक सम्प्रदायक संबंधमे विचार व्यक्त करैत डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश', रामवृक्ष बेनीपुरी, पं॰ शिवनन्दन ठाकुर, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', रामचन्द्र शुक्ल आदि विद्वान हिनका शैव, बाबू राम सक्सेना स्मार्त्त आ शाक्त, डॉ॰ उमेश मिश्र एवं नरेन्द्र नाथ दास 'त्रिदेवोपासक' 'म॰ म॰ हरप्रसाद शास्त्री, पं॰ रमानाथ झा आदि विद्वान 'पंच देवोपासक' मानने छथि।

विद्यापतिक रचना :– महाकवि विद्यापतिक रचना तीन भाषामे उपलब्ध अछि– संस्कृत, अवहट्ठ आ मैथिली। हिनक विद्वताक परिचय हिनक रचनेसँ प्राप्त होइत अछि। ओ अन्य विषय पर विविध ग्रंथ संस्कृतमे लिखलनि संगहि अवहट्ठमे 'कीर्तिलता' ओ 'कीर्त्तिपताका' तथा मैथिलीमे प्रचुर पदावलीक रचना कयलनि।

अवहट्ठ रचना :– 1. कीर्तिलता :– ई अवहट्ठ भाषामे लिखल विद्यापतिक प्रथम प्रमाणिक रचना थिक। कीर्तिलताक संग एहि रचनाक सूचना डॉ॰ ग्रियर्सनकैं तखन भेटल छल जखन ओ विद्यापतिक पदक संग्रह कऽ रहल छलाह मुदा ओहि काल हुनका प्राचीन हस्तलेख उपलब्ध नहि भऽ सकल। एकर प्राचीन हस्तलेखक पता सर्वप्रथम 1898 ई॰मे म॰ म॰ हरप्रसाद शास्त्रीकैं काठमांडूमे लागल। 1922 ई॰मे ई नेपालसँ एकर प्रतिलिपि अनलनि आ एकर प्रथम संस्करण हिनके सम्पादनमे 1924 ई॰मे कलकत्ताक ओरिएण्टल प्रेससँ प्रकाशित भेल। तकर बाद अनेको विद्वानक सम्पादनमे ई पोथी छपल ताहिमे प्रमुख छथि डॉ॰ बाबूराम सक्सेना, शिव प्रसाद सिंह, डॉ॰ उमेश मिश्र, डॉ॰ बीरेन्द्र श्रीवास्तव, पं॰ रमानाथ झा, डॉ॰ बासुदेव नारायण अग्रवाल आदि। एहिमे रमानाथ बाबूक सम्पादनमे प्रकाशित पोथी बेसी प्रमाणिक अछि जे मुख्यतः ब्रिटिश म्यूजियम लंदनमे सुरक्षित 'कीर्तिलता'क ओहि प्रतिलिपिपर आधारित अछि जकरा 1905 ई॰कैं कवीश्वर चन्दा झा कलकत्तामे लिखि तैयार (जकरा ओ ग्रियर्सन के देलनि) कयने रहथि आ रमानाथ बाबू समस्त हस्तलेख आ प्रकाशित संस्करण सभक उपयोग कयने छथि। ई महाकवि विद्यापतिक पहिल रचना थिक ताहिमे विद्वानक मध्य मतैक्य नहि अछि। इतिहासकार डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखने छथि– "एकर अंतिम श्लोकमे म॰ म॰ हरप्रसाद शास्त्री 'खेलन कवि'क जे पाठ देल अछि, ताहिसँ भ्रमक सेहो बड़ प्रचार भेल जे ई विद्यापतिक प्रथम ग्रन्थ थिक। डॉ॰ उमेश मिश्र, विमान बिहारी मजुमदार, डॉ॰ जयकान्त मिश्र, पं॰ उपेन्द्र ठाकुर प्रभृतिक द्वारा सेहो इएह पाठ शुद्ध मानि लेल।"[7]

2. कीर्तिपताका :– ई अवहट्ठ भाषामे रचित विद्यापतिक दोसर प्रमाणिक रचना थिक। एकर अंतमे रचयिताक रूपमे स्पष्ट रूपसँ विद्यापतिक नामोल्लेख अछि। एकर पहिल प्रकाशन 1960 ई॰मे डॉ॰ उमेश मिश्रक सम्पादनमे भेल जाहिमे हुनक अनुमान छनि जे एकर रचना राजा अर्जुन राय आ जगत सिंहक आश्रममे भेल होयत मुदा एहि कृतिक सम्यक परीक्षणसँ एहन लगैत अछि जे एकर रचना राजा शिवसिंहक पलायनक पश्चात भेल होयत

वास्तवमे हुनके यशोगाथाकेँ आधार बना, एकर रचना कयल गेल अछि। पोथी खण्डित अवस्थामे अछि एकर बीस पत्र नष्ट भऽ गेल अछि। तेँ कहब कठिन अछि जे एहिमे ग्रंथकार की लिखने छलाह। एहि ग्रंथक उत्तरार्द्ध महाराज शिवसिंहक बीरता सँ सम्बद्ध रखैत अछि। तेँ अंदाज कयल जाइत अछि जे नष्ट भेल पत्रमे शिवसिंहक श्रृंगारिक पक्षक वर्णन होअय। एहि रचनाक पूर्वार्द्ध श्रृंगार रस प्रधान अछि। तँ उत्तरार्द्ध वीर रस प्रधान। मैथिली साहित्यक हंसवृत्ती समीक्षक आचार्य रमानाथ झा लिखने छथि– "ओना तँ विद्यापति अपन प्रभु शिवसिंहक कीर्त्तिपताका सएह फहराए गेल छथि परन्तु कीर्त्तिपताका नष्ट भए गेल, लुप्त प्राय अछि। कीर्तिपताका कहि जे ग्रंथ प्रकाशित भेल अछि तकर प्रस्तावनामे 'जगतसिंहक' कीर्त्तन अछि परन्तु जतबओ विद्यापतिक रचना उपलब्ध अछि निश्चित रूप सँ विद्यापतिक रचना प्रमाणित होइत अछि, ततबहुँ सँ शिवसिंहक सम्बन्धमे बहुतो ज्ञातव्य विषय ज्ञात भए जाइत अछि।"[8]

डॉ॰ बासुकीनाथ झा अपन पोथी 'विद्यापति काव्यालोचन'मे लिखने छथि जे ई ग्रन्थ सेहो अवहठ भाषामे रचित अछि। एहिमे म॰ शिवसिंहक यशोवर्णन अछि। ई ग्रन्थ पद्यमय अछि तथा यदाकदा संस्कृतक श्लोक सेहो समाविष्ट अछि। डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन इतिहासमे लिखने छथि– "विद्यापतिक दोसर अवहठ भाषाक ग्रंथ थिक कीर्त्तिपताका। एहि मध्य महाराज शिवसिंहक यश–प्रशस्त अछि। एहि ग्रन्थक रचना मुख्यतः दोहा ओ छन्दमे अछि मुदा कतहु–कतहु संस्कृतक श्लोक सेहो अछि ओ मध्य–मध्यमे गद्यक रचना सेहो अछि।"[9]

किछु विद्वानक मत छनि जे एहिमे दू रचनाक विवरण एक संग सम्मिलित भऽ गेल अछि। रचनाक उत्तर्राद्धक नाम कीर्त्तिपताका अछि एहिमे कोनो सन्देह नहि। एकर पूर्वार्द्धकेँ शशिनाथ झा 'रस वाणी' वा 'रस मंजरीक' संज्ञा देने छथि तँ डॉ॰ इन्द्रकान्त झा एकरा 'हरिकेलि' कहने छथि।

संस्कृत रचना :–

1. **भूपरिक्रमण** :– डॉ॰ विमान बिहारी मजुमदार, रमानाथ बाबू, डॉ॰ मुनीश्वर झा, डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश', डॉ॰ बासुकीनाथ झा आदि विद्वान एहि पोथीकेँ विद्यापतिक प्रथम रचना मानने छथि। डॉ॰ श्रीश कहने छथि– "एकरा भूगोल आ नीति दुनू विषयक ग्रन्थ कहि सकैत छी। भाषा–शैली आदि सब दृष्टिएँ ई विद्यापतिक प्रथम रचना सिद्ध होइत अछि।"[10]

डॉ॰ बासुकीनाथ झा कहने छथि– "एहि आधार पर आचार्य रमानाथ झा 'भूपरिक्रमा' एवं 'कीर्त्तिलता'केँ विद्यापतिक प्रथम रचना मानैत छथि। ओइनवार वंशक जतेक राजा–रानीक आज्ञासँ विद्यापति रचना कएलन्हि, ताहिमे देवसिंह सभसँ वयोवृद्ध छलाह। भाषा तथा रचना शैली सेहो 'भूपरिक्रमा'केँ विद्यापतिक प्रथम रचना सिद्ध करैत अछि।"[11] मुदा अधिकांश विद्वान एकरा 'कीर्त्तिलता'क पश्चातक रचना मानैत रचना–क्रमक दृष्टिसँ विद्यापतिक दोसर रचना मानलनि अछि। किछु विद्वान एहि पोथीक नाम 'भूपरिक्रमण' तँ किछु 'भूपरिक्रमा' लिखने छथि जे महाराज देवसिंहक आज्ञासँ लिखल गेल जाहिमे नैमिषारण्यसँ मिथिला (जनकदेश) मध्य आठ देशक तीर्थ वर्णन

कयल गेल अछि। ई पोथी पौराणिक आख्यानक रूपमे लिखल गेल अछि जे ऐतिहासिक आ भौगोलिक दृष्टियें महत्वपूर्ण अछि। एहि पोथीक माध्यमसँ विद्यापति भूगोलशास्त्री बाला प्रतिभापर प्रकाश पड़ैत अछि मुदा पं. शिवनन्दन ठाकुरक कथनानुसार एकरा भूगोल विषयक पोथीक श्रेणीमे नहि राखल जा सकैछ। देवसिंह असलानक आक्रमणक कारणे राज्याच्युत भऽ नैमिषारण्य चलि गेल रहथि तैं पोथीमे हुनक नामक आगाँ महाराज उपाधि नहि लगाओल गेल अछि। पोथी पौराणिक आख्यान पर आधारित अछि जाहिमे सूतबधजन्य ब्रह्महत्या लगला पर बलदेवकेँ पापसँ मुक्त होयबाक लेल महर्षि धौम्य भूपरिक्रमा करबाक आदेश दैत छथि। जेना 'कीर्त्तिलता' पोथीक रचनामे महाकवि विद्यापति परम्परागत अपभ्रंश भाषाकेँ नहि छोड़लनि अछि, तहिना संस्कृतक प्रथम ग्रंथ 'भूपरिक्रमण'मे परम्परागत पौराणिक शैलीकेँ नहि छोड़ि सकलाह। 'भूपरिक्रमण' पोथीमे विद्यापतिक योजना छल पैंसठि (65) देशक वर्णन पैंसठि कथामे करब मुदा देवसिंहक संग मिथिला घुरि अयबाक कारणे ई पोथी अधूरे रहि गेल आ अपन पोथी 'पुरुष–परीक्षा'मे एहि आठो कथाकेँ समाविष्ट कयल गेल।

2. पुरुष परीक्षा :– पुरुष परीक्षा विद्यापतिक दोसर प्रमाणिक संस्कृत रचना मानल जाइत अछि जे राजा शिवसिंहक आज्ञासँ लिखल गेल अछि। ई ग्रंथ नीतिपूर्ण कथा सभक एक संग्रह थिक जे पंचतंत्र, हितोपदेश आदि प्राचीन ग्रन्थ परम्परामे रचित भेल अछि। ग्रंथ चारि परिच्छेदमे विभाजित अछि– प्रथममे वीर, दोसरमे सुबुद्धि, तेसरमे सुविद्य आ चारिम परिच्छेदमे चारु पुरुषार्थक प्रतिपादक कथा अछि। कथाक अवान्तर उपकथा सेहो समाविष्ट अछि। ई विद्यापतिक सर्वश्रेष्ठ संस्कृत रचना थिक आ एहि पोथीक सर्वोच्च सफलताक रहस्य थिक एवं संवाद–शैलीक विशिष्ट रूप–विधान आ कथाक संग प्रतिकथाक निरूपण। अन्वय–व्यतिरेक शैलीमे प्रत्येक उदाहरणक प्रत्युदाहरण देब, एकर शिल्पक अपन विलक्षणता थिक। एहिमे कुल 44 टा कथाक समावेश अछि। कथावस्तु एहि प्रकारेँ अछि– चन्द्रतपा नामक नगरमे पारावार नामक राजा छलाह जिनका पदमावती नामक कन्या छलथिन। हुनक विवाहक प्रसंग चिन्तातुर राजा सुबुद्धि नामक मुनिसँ कन्याक समतुल्य वरक विषयमे पुछैत छथि जकर उत्तरमे मुनि कहैत छथि जे कोनो पुरुषसँ विवाह करियौन। अकबकाइत राजा मुनिसँ पुछैत छथि जे हे मुनिवर! जे पुरुष नहि, से वर कोना हेताह? सुबुद्धि मुनि वरक लक्षण निरूपित करैत छथि। अद्भुत रससँ प्रारंभ एहि ग्रंथमे वीर, शृंगार आ अन्य रसक निरूपण भेल अछि। 'पुरुष–परीक्षा' विद्यापति आ हुनक युगक साक्षात दर्पण थिक।

डॉ॰ दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखने छथि– "पंचतंत्र हितापदेश आदि परम्पराक ई नीति कथा थिक।...... एकर भाषा प्रगल्भ ओ प्रसादपूर्ण अछि।"[12]

3. लिखनावली :– लिखनावली विद्यापतिक तेसर प्रमाणिक संस्कृत रचना मानल गेल अछि। राजा पुरादित्यक गिरिनारायणक आज्ञासँ 299 लं॰ स॰मे संस्कृत पढ़ल–लिखल लोक सभकेँ पत्र–व्यवहारमे शिक्षित करबाक उद्देश्यसँ महाकवि द्वारा एकर रचना भेल। सर्वप्रथम एकर प्रकाशन 1901 ई॰मे दरभंगा यूनियन यंत्रालयसँ भेल। पोथीक प्रारंभमे मंगलाचरणमे गणेशक वन्दना कयल गेल अछि आ तत्पश्चात चारि कोटिक 84 टा पत्रक नमूना संकलित

(41

...मे उच्च लोकनिक हेतु 18, छोट लोकनिक हेतु 28, समकक्ष लोकनिक हेतु 7 आ नियम व्यवहारोपयोगी ... पत्र संकलित अछि। प्रत्येक श्रेणीक पत्रक लेल विद्यापति एहिमे पृथक शैलीक प्रयोग कयने छथि।

4. **विभागसार** :– विभागसारकेँ महाकवि विद्यापतिक चारिम प्रमाणिक संस्कृत रचना मानल गेल अछि जे ओइनवार वंशीय महाराज नरसिंहदेवक आज्ञासँ लिखल गेल छल। सभसँ पहिने एकर प्रकाशन राधकृष्ण चौधरी अपन सम्पादनमे 'मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति' नामक ग्रंथक परिशिष्टमे कयलनि। सन 1976 ई॰मे पं॰ गोविन्द झाक सम्पादनमे मैथिली अकादमी, पटनासँ एकर स्वतंत्र रूपसँ प्रकाशन भेल।

5. **दुर्गा भक्ति तरंगिणी** :–एकरा विद्यापतिक पाँचम संस्कृत रचना मानल जाइत अछि। महाराज भैरव सिंहक आज्ञासँ एहि ग्रंथक रचना भेल जकर पहिल प्रकाशन सभसँ पहिने 1902 ई॰मे पं॰ परमेश्वर शर्माक सम्पादनमे राज प्रेस, दरभंगासँ भेल, पश्चात ईशानचन्द्र विद्याविनोद अपन सम्पादनमे 1934 ई॰मे सिलहटसँ एकरा प्रकाशित कयलनि।

6. **गयापत्तलक** :– ई एक छोट–छीन पुस्तक थिक जे कोनो राजाक आज्ञासँ नहि अपितु विद्यापति 'स्वान्तः सुखाय' लिखने छथि। मंगलाचरणक श्लोक अथवा कोनो राजाक नामोल्लेख एहिमे नहि अछि। मात्रा 'ओम गदाधराय नमः' उल्लेखक पश्चात मूल विषय वर्णित अछि। ग्रंथकार एहिमे अत्यन्त संक्षिप्त एवं सारगर्भित शैलीमे गया–श्राद्ध विधिक वर्णन विवेचन कयने छथि। एहिमे प्रेतशिला, प्रभास–पर्वत, विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद, कश्यपपद आदि तीर्थ केन्द्र पर नानाविध संकल्पवाक्यक माध्यमसँ श्राद्ध कर्म करबाक उल्लेख अछि। अन्तमे सपत्नीक काममोक्ष याचनाक विधान सेहो अछि।

7. **वर्षकृत्य** :– किछु विद्वान एकरा विद्यापतिक रचना होयबामे संदेह प्रकट कयने छथि। एहन बुझाइत अछि जे ग्रंथकार एकर रचना योजनाबद्ध रूपसँ नहि कयने छथि। आश्रयदाताक रूपमे कोनो राजाक नामोल्लेख नहि भेल अछि।

8. **गंगावाक्यावली** :– ई ग्रंथ महारानी विश्वास देवीक आज्ञासँ लिखल गेल। प्रो॰ (डॉ॰) बासुकीनाथ झा लिखने छथि– "रानी विश्वासदेवीक आज्ञासँ ई ग्रंथ लिखल गेल। एहिमे गंगाक स्मरण–कीर्त्तन, पुराण प्रताप तथा गंगातट पर प्राण–विसर्जनक विधि–विधान एवं फल आदिक वर्णन उल्लेख अछि।"[12]

9. **शैवर्स्वस्वसार** :– विद्यापति एहि ग्रंथक रचना महाराज पद्मसिंहक पत्नी महारानी विश्वास देवीक आज्ञासँ कयलनि। 'शैवर्स्वस्वसार'क प्रकाशन मैथिली अकादमी, पटनासँ सन 1979 ई॰मे डॉ॰ इन्द्रकान्त झाक सम्पादनमे भेल। ओकर पश्चात डॉ॰ जयमन्त मिश्र, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दिसिसँ विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली भाग–1क अन्तर्गत एकर संपादन कयलनि। ई एकटा शिव विषयक धर्मिक निबन्ध थिक। एहिमे शिव–पूजनक विधि–विधानक सप्रमाण वर्णन विवेचन भेल अछि।

10. **शैवर्स्वस्वसार प्रमाण भूत संग्रह** :– एकर रचना महाकवि विद्यापति महाराज पद्मसिंहक पत्नी महारानी विश्वास देवीक आज्ञासँ कयलनि। डॉ॰ जयमन्त मिश्रक सम्पादनमे एकर प्रकाशन सन 1980 ई॰मे विद्यापति संस्कृत ग्रंथावली भाग–1क अन्तर्गत कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयसँ भेल। ई पोथी वस्तुतः ग्रंथकारक कोनो मौलिक

138

140

...थिक। शैवर्स्वस्वसार प्रमाणभूत संग्रहमे शैवर्स्वस्वसारसँ प्रमाणांश निकालि राखल गेल संग्रह अछि जकर ...ल्लेख शैवर्स्वस्वसारमे कयल गेल अछि।

11.दानवाक्यावली :—महाकवि विद्यापति एहि पोथीक रचना महाराज नरसिंहदेव दर्पनारायणक पत्नी धीरमतीक आज्ञासँ कयलनि। एकर पहिल प्रकाशन सन् 1883 ई॰मे पं॰ फणिशर्माक सम्पादनमे भेल। पोथीक प्रारंभमे भगवान मुकुन्दक अभ्यर्थना अछि तत्पश्चात महारानी धीरमतीक विरूदावली। तदन्तर शास्त्रामे विहित बहुविध दानक प्रशंसा करैत ओकर विस्तृत वर्णन प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि संदर्भमे ग्रंथकार दानक प्रमुख विधि बतबैत ओकर काल, स्थान, पात्र आदिक विवेचन कयने छथि। बारह मासक दानक बारह संकल्प वाक्यक उल्लेख सेहो भेल अछि।

12. मणिमंजरी :— महाकवि विद्यापति लिखित ई एकमात्र नाटिका अछि जाहिमे राजा चन्द्रसेन आ मणिमंजरीक कथा वर्णित अछि। एहि नाटिकाक अन्वेषणक श्रेय कवीश्वर चन्दा झा आ डॉ॰ ग्रियर्सनकेँ छनि। एहि नाटिकाक प्रस्तावना आ भरतवाक्यमे एकर रचयिताक रूपमे स्पष्ट रूपसँ विद्यापतिक नामक उल्लेख अछि। सभसँ पहिने पं॰ शिवनन्दन ठाकुर एकरा विद्यापतिक प्रमाणिक रचनाक रूपमे स्वीकार कयलनि।

13. गोरक्ष विजय :— ई महाकविक संस्कृत—मैथिली प्राकृत मिश्रित प्रथम प्रमाणिक नाट्य—रचना थिक। एहि पोथीक रचना महाराज शिवसिंहक आज्ञासँ भैरव पूजाक अवसर पर भेल छल। एकरा सर्वप्रथम पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक श्रेय म॰ म॰ उमेश मिश्र एवं जयकान्त मिश्रकेँ छनि जे अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, तीरभुक्ति, इलाहाबाद दिससँ मूल फोटो—स्टेट ब्लॉगक संग 1961 ई॰मे एकरा प्रकाशित कयलनि।

14.व्याडी—भक्ति तरंगिणी :— 'दुर्गाभक्ति तरंगिणी' शैलीमे रचित एहि ग्रंथमे सर्प—पूजाक विधि—विधान ओ पद्धतिक समावेश अछि। एकर रचना विद्यापति दर्पनारायण महाराज नरसिंहक राज्यकालमे कयल। एकर पाण्डुलिपि ढाका विश्वविद्यालयमे सुरक्षित अछि जकर आदिसँ मात्र 16 टा पत्र शेष अछि। सर्प—पूजनसँ सम्बन्ध एहि कृतिकेँ सर्वप्रथम डॉ॰ सुकुमार सेन महाकवि विद्यापतिक बतौने छथि।

मैथिली पद :— महाकवि विद्यापति मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कविक रूपमे परिगणित छथि आ हिनक युग मैथिली साहित्यक लेल अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि।

संदर्भ सूची :—

1. विद्यापति— डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा, मैथिली अकादमी, पटना 1989, पृष्ठ सं. — 4
2. मैथिली साहित्यक इतिहास — डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृष्ठ सं. — 81
3. मैथिली साहित्यक इतिहास — डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृष्ठ सं. — 83
4. उपरोक्त, पृष्ठ सं. — 83, 84
5. उपरोक्त, पृष्ठ सं. — 83

6. उपरोक्त, पृष्ठ सं. – 86
7. उपरोक्त, पृष्ठ सं. – 89–90
8. प्रबंध संग्रह – रमानाथ झा, शेखर प्रकाशन, पटना, 2019, पृष्ठ सं. – 69
9. मैथिली साहित्यक इतिहास – डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृष्ठ सं. – 91
10. उपरोक्त, पृष्ठ सं. – 87
11. विद्यापति काव्यालोचन – डॉ. बासुकिनाथ झा, मैथिली अकादमी, पटना 2018, पृष्ठ सं. – 19
12. उपरोक्त, पृष्ठ सं. – 21

Impact Factor : 6.246

ONLINE ISSN: 2582-0095

Gyanshauryam
International Scientific Refereed Research Journal

website : www.gisrrj.com

Certificate of Publication

12-Jun-2023

Ref : GISRRJ/Certificate/Volume 6/Issue 3/797

This is to certify that the research paper entitled

विद्यापतिक गीतमे रसक विविध रूपक परीक्षण

राजीव कुमार झा
शोधार्थी, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ

After review is found suitable and has been published in the Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal(GISRRJ), Volume 6, Issue 3, May-June 2023. [Page No : 55-61]

This Paper can be downloaded from the following GISRRJ website link

https://gisrrj.com/GISRRJ23639

GISRRJ Team wishes all the best for bright future

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Editor in Chief
Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal

Associate Editor
GISRRJ

Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

विद्यापतिक गीतमे रसक विविध रूपक परीक्षण

राजीव कुमार झा
शोधार्थी
पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ

Article Info
Volume 6, Issue 3
Page Number : 55-61

Publication Issue :
May-June-2023

Article History
Accepted : 01 June 2023
Published : 12 June 2023

रस आ गुणकेँ काव्यक आत्मा मानल जाइत अछि। रसक महत्ता सर्वोपरि अछि। रसक अर्थ होइत अछि आनंद। एकर तात्पर्य ई अछि जे जाहि रचनाकेँ पढ़ि आनंदक प्राप्ति होअय, वैह काव्य थिक। नाट्यशास्त्रक प्रणेता आचार्य भरत मुनि अपन प्रसिद्ध ग्रंथमे लिखने छथि– "विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगद्रस–निरपत्तिः"[1]

मोनक विचार भाव कहबैत अछि। ह्रदयमे वासना प्रेम, क्रोध आदिक रूपमे रहयबाला भाव स्थायीभाव कहबैत अछि। ई भाव सभ मोनमे सुतल रहैत अछि मुदा अनुकूल अवसर भेटतहिं, ओ अनायासे जागि जाइत अछि। जखन कोनो स्त्रीकेँ मनोनुकूल पुरुष वा कोनो पुरुषकेँ मनोनुकूल स्त्री भेटि जाइत छथि, तखन ओकरा प्रति आकर्षण भाव जागैत अछि। इयह आकर्षण प्रेम कहबैत अछि। एहिना ककरो मोनक प्रतिकूल आचरण करयबाला व्यक्ति प्रति ओकरा क्रोध उत्पन्न होइत अछि अर्थात जखन धरि मोनक अनुकूल वा प्रतिकूल व्यक्ति नहि भेटैत अछि, तखन धरि नहि तँ प्रेम उत्पन्न होइत अछि आ नहि क्रोध मुदा ई भाव मनुष्यक ह्रदयमे जन्मसँ ल' क' मृत्यु धरि वर्तमान रहैत अछि। तात्पर्य ई जे ह्रदयक प्रसुप्त भावकेँ जगयबाक लेल कोनो–ने–कोनो बाह्य वस्तुक आवश्यकता होइत अछि। मनुष्यक ह्रदयमे मुख्यतः दू प्रकारक भाव रहैत अछि–1. स्थायी आ 2. अस्थायी। जे भाव बेसी काल धरि मनुष्यक ह्रदयमे अवस्थित रहैत अछि, ओकरा 'स्थायी भाव' आ जे अल्प समय धरि टिकल रहैत अछि, ओकरा 'अस्थायी भाव' कहल जाइत अछि। "जे मनुष्यक स्थायी भावकेँ उद्दीप्त क' दैत अछि, विभाव कहबैत अछि।"[2]

एकर दू भेद होइत अछि– 1. आलम्बन विभाव, 2. उद्दीपन विभाव। जाहि ठाम नायक वा विषयक अवलम्बनसँ (जेना राम, सीता, शकुंतला) रसक उद्रेक होइत अछि, ओकरा आलम्बन विभाव कहल जाइत अछि अर्थात जाहि वस्तु वा व्यक्ति द्वारा ई भाव जगाओल जाइत अछि, ओकरा आलम्बन कहल जाइत अछि। आलंबनक अर्थ अछि अवलंब, आधार। जे भावक आधार भेल, जाहिपर भाव टिकल ओ ओकर आधारपर आलम्बन भेल। जँ ओ नहि रहैत तँ प्रेम वा आन स्थायी भाव कोन वस्तुपर स्थिर रहैत ? तात्पर्य ई जे प्रत्येक भावक उद्बोधनक लेल आश्रय (जाहिमे ओ भाव होअय) आ आलम्बन (जकरा प्रति ओ भाव होअय) अनिवार्य अछि मुदा भावक उद्बोधने पर्याप्त नहि अछि, ओ रसक स्थितिमे कोना पहुँचय, ताहि लेल वृद्धि (उपचय) सेहो आवश्यक अछि। जँ भाव मात्रा अंकुरणक स्थितिमे रहत तँ रसक निष्पत्ति नहि होयत। जाहि कारणसँ भावमे वृद्धि होइत अछि, ओकरा 'उद्दीपन' कहल जाइत अछि। उद्दीपनक अर्थ होइत अछि उद्दीप्त करयबाला, बढ़बयबाला। आलम्बन आ उद्दीपन दुनू विभाव कहबैत अछि। "उद्दीपन विभाव ओहन वस्तु वा स्थितिकेँ कहल जाइछ– जकरा देखि स्थायी भाव तीव्रतर वा उद्दीप्त होइत अछि। जेना– चन्द्रोदय, कोकिल, उपवन आदि।"[3]

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भाव उत्पन्न भेलापर ओहि अनुरूप होमयबाला शारीरिक चेष्टाकेँ अनुभाव कहल जाइत अछि। एकर दोसर सेहो अछि– अनुभव करयनिहार अर्थात जाहि चेष्टासँ भावक अनुभव होअय।

किछु भाव एहन होइत अछि जे अल्प समये धरि स्थायी रहैत अछि एहन अस्थायी भावकेँ संचारी वा व्यभिचारी भाव कहल जाइत अछि। संचारीक (सम्+चारी) अर्थ होइत अछि संचरण करयबाला आ नहि टिकयबाला। व्यभिचारी (वि+अभि+चारी)क अर्थ होइत अछि विशेष रूपसँ (अभि) चारु दिस चरण करयबाला। एकर तैंतीस प्रकार मानल गेल अछि। डॉ. दिनेश कुमार झाक अनुसार– "व्यभिचारी भाव स्थायी भावक विपरीत क्षणिक होइत अछि। ई स्थायी भाव सभक सहकारी रूपमे वर्त्तमान रहैत अछि। ई कोनो एके रस धरि सीमित नहि रहैत अछि। एकेटा व्यभिचारी भाव भिन्न–भिन्न रस सभमे उदय एवं अस्त गतिकेँ प्राप्त करैत रहैत अछि। ई व्यभिचारी भाव 33 प्रकारक होइत अछि–1. निर्वेद, 2. ग्लानि, 3. शंका, 4. असूया, 5. मद, 6. श्रम, 7. आलस्य, 8. दैन्य, 9. चिन्ता, 10. मोह, 11. स्मृति, 12. धैर्य, 13. कीड़ा, 14. चपलता, 15. हर्ष, 16. आवेग, 17. जड़ता, 18. गर्व, 19. विषाद, 20. औत्सुक्य, 21. निद्रा, 22. अपस्मार, 23. स्वप्न, 24. बिबोध, 25. अमर्ष, 26. अवहित्य, 27. उग्रता, 28. मति, 29. व्याधि, 30. उन्माद, 31. मरण, 32. त्रास, 33. वितर्क।"[4]

'रस' भारतीय वांगमयक एकटा अत्यन्त प्राचीन शब्द अछि जकर प्रयोग ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शतपथ ब्राह्मण, कठोपनिषद, निरूक्त, व्याकरण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथमे भेल अछि जे विभिन्न अर्थकेँ वाहन करैत अछि। दिनेश बाबू कहने छथि – "काव्यशास्त्रामे 'रस' अलौकिक एवं चमत्कारी ओहि आनन्द विशेषक बोधक अछि जकर अनुभूति सहृदयक हृदयकेँ द्रुत, मनकेँ तन्मय, हृदय व्यापारकेँ एकतान, नेत्रकेँ जलाप्लुत, शरीरकेँ पुलकित एवं वचन रचनाकेँ गदगद रखबाक क्षमता रखैत अछि। इएह आनन्द काव्य उपादेश अछि एवं एकरे जागृति वांगमयक अन्य प्रकार सभसँ विलक्षण काव्य नामक पदार्थक प्राण प्रतिष्ठा करैत अछि। जाहि प्रकारेँ आत्मज्ञानी रसरूप परमात्माक साक्षात्कारसँ कृतकृत्य भ' आनन्द विभोर भ' जाइत छथि, ओहि प्रकारेँ काव्य मर्मज्ञ सहृदय रसिक ब्रह्मानन्द सहोदर अलौकिक काव्य–रसक आस्वादन क' आत्मविभोर भ' जाइत छथि।"[5]

आचार्य भरत मुनि अपन प्रसिद्ध ग्रंथ नाट्यशास्त्रमे स्पष्ट रूपसँ कहने छथि–'नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।"[6] अर्थात रसक अभावमे कोनो अर्थक आविर्भूत होयब सम्भव नहि अछि। साहित्य दर्पणक रचयिता आचार्य विश्वनाथ स्पष्टतः काव्यकेँ परिभाषित करैत कहने छथि – "वाक्यं रसात्मकं काव्यम"[7] अर्थात रसात्मक वाक्य काव्य कहबैत अछि। हिनका अनुसारेँ संस्कृत काव्य–शास्त्रक अन्तिम प्रमुख आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ 'रसगंगाधरक रचयिता' सेहो रसेकेँ काव्यक आत्मा स्वीकार कयने छथि। हिनका द्वारा प्रस्तुत काव्यक परिभाषा 'रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्दःकाव्यम्'मे रसक महत्ताक स्वीकृतिक अतिरिक्त आर किछु नहि अछि।

रसक संख्या आ नामक सम्बन्धमे विद्वान लोकनिमे मतैक्य नहि अछि। डॉ॰ दिनेश कुमार झा लिखने छथि– 'आचार्य भरत मुनि, जे रस सम्प्रदायक जनक छथि, अपन ग्रन्थमे मात्र चारिटा रस– शृंगार, रौद्र, वीर एवं वीभत्सक प्रमुख रूपसँ उल्लेख कयने छथि तथा एहि चारु रसो क्रमशः हास्य, करुण, अद्भूत एवं भवानक रसक उत्पत्ति मानने छथि। एकर अतिरिक्त ओ शान्त रसक निरुपण सेहो कयने छथि। सभ मिला नौ प्रकारक रसकेँ आचार्य भरतमुनि द्वारा मान्यता प्राप्त भेल अछि। आचार्य मम्मट उपर्युक्त मतक समर्थक छथि। आचार्य विश्वनाथ दसम रस 'वात्सल्य'क निरुपण कयने छथि। रुप गोस्वामी एवं मधुसूदन सरस्वती एगारहम रस भक्तिक परिकल्याण कयने छथि। एकरो अन्तिम नहि मानल

(35

स्वतन्त्रातापूर्वक नवीन–नवीन रसक नामकरण करबाक दिशामे एखनहुँ विद्वानलोकनि प्रयत्नशील छथि किन्तु एतबा तँ साहित्य जगतमे 'नव रस' अर्थात रसक संख्या नौ होइत अछि, एकटा रुढ़ प्रयोग जकाँ भ' गेल अछि।"[8]

आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा सेहो 9 टा स्थायीभावसँ 9 टा रसक निष्पत्ति मानैत दू टा आर रसक उल्लेख कयने छथि।

"स्थायी भाव – रस

1. रति – शृंगार
2. हास – हास्य
3. शोक – करुण
4. क्रोध – रौद्र
5. उत्साह – वीर
6. भय – भयानक
7. जुगुत्सा – बीभत्स
8. विस्मय – अद्‌भुत
9. निर्वेद – शांत

इन प्रसिद्ध रसों के अतिरिक्त दो और रस माने जाते हैं – 1. वत्सल और 2. भक्ति। भक्ति को 'उज्जवल रस' या 'मधुर रस' भी कहते हैं। वत्सल रस का स्थायीभाव है वात्सल्य और भक्ति रस का स्थायी भाव है भगवद्विषयक रति।"[9]

डॉ. रमण कुमार झा अपन 'भविष्णु' पोथीमे रस स्थायी भाव, गुण, सहायक रस, अनुभाव, संचारी भावक उल्लेखक संग 11 टा रसक विवरण प्रस्तुत कयने छथि।

ई आवश्यक नहि जे पूर्ण सामग्री रहले पर (स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी भाव) रसक निष्पति होअय एहिमे दू वा एकोटा रहलो पर रसक–निष्पत्ति भ' सकैत अछि जे शेषक सुगमतासँ कल्पना भ' जाय।

विद्वान प्राध्यापक एवं प्रख्यात समालोचक डॉ. बासुकीनाथ झा लिखने छथि– "रस काव्यक वास्तविक विशेषता थिक। काव्यक रसानुभव लौकिक अनुभव नहि, श्रवण आ दर्शनसँ सहृदयक (पाठक, श्रोता अथवा दर्शकक) हृदयमे जे कलात्मक, अलौकिक एवं चमत्कारी आनन्दक आस्वाद होइत अछि, ओहि लोकोत्तर आनन्दकेँ साहित्यमे रसक संज्ञा देल जाइत अछि।"[10]

वीर–रस :– अधिकांश विद्वानक मानब छनि जे महाकविक वीर–रस प्रधान गीत नहिये जकाँ लिखने छथि। हिनक अवहट्ठ–रचनामे एहि रसक निर्वाह कयल गेल अछि। किछु विद्वान हिनक देवी–वन्दना जे गोसाउनिक गीत नामसँ प्रसिद्ध अछि, ओहिमे वीर–रसक आंशिक चित्रण स्वीकार कयने छथि–

"घन–घन घनन घुघुर कटि बाजए,
हन–हन कर तुअ काता।"[11]

रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा संकलित 'विद्यापति की पदावली' पोथीमे पदक भावार्थ विशेषमे कहल गेल अछि– "यह वीर–रस को साकार करनेवाला युद्धगीत जैसा है। भैरवी महाराज शिवसिंह की कुलदेवी थी। इसमें साभिप्राय शब्दों का सुंदर

है और सार्थक ध्वनि के अनुरूप– 'घन–घन घनन घुघुर' तथा 'हन–हन कर तुअ काता' जैसे शब्दों का कुशल किया गया है।"[12]

डॉ॰ बासुकीनाथ झा कहने छथि जे "विद्यापतिक पदावलीमे स्फुट रूपसँ वीर रसक पद उपलब्ध नहि होइत अछि। एकाध स्थलपर बसन्तक चित्रण विजयी राजाक रूपमे अछि किन्तु ओतए मूल रूपसँ रति स्थायी भाव अछि जाहिसँ वीर रसक परिपाक सम्भव नहि अछि।"[13]

'प्रेम–सौन्दर्य विधायक विद्यापति' पोथीक लेखक डॉ॰ वीरेन्द्र मल्लिक सेहो महाकविक अवहट्ठ रचना 'कीर्तिलता' एवं 'कीर्तिपताका'कैं ओजपूर्ण वीर–रससँ ओत–प्रोत रचना मानने छथि। प्रसिद्ध विद्वान, समालोचक, निबंधकार, इतिहासकार प्रो॰ (डॉ॰) देवकान्त झाक मानव छनि– "खाली पदावलिक आधारपर हुनका मात्र श्रृंगार आ भक्तिमे खुटेसब, घोर अन्याय थिक। विद्यापति सब रसी छलाह। निःसन्देह श्रृंगार रसराज थिक। तैं रससिद्ध विद्यापति ओकरा यथेष्ट मर्यादा देलनि अछि मुदा आनो रसमे ओ कम नहि छथि। विशेष रूपसँ वीर हुनक रचना–संसारक मुख्य भूमिपर प्रतिष्ठित अछि। कीर्तिलता आर पुरुष परीक्षामे वीर अंगी रस अछि। पदावलिक काली ओ दुर्गाक वन्दनामे वीरक धमक अछि। अन्यत्र अंग रूपसँ ई सब तरि कोनो ने कोनो रुपमे अपन रंग देखबिते अछि। रौद्र आ अद्‌भुत वीरक पोषक रुपमे आकर्षक अछि।"[14]

(3) हास्य रस :– हास्य रसक स्थायी भाव थिक – हास।

महाकवि विद्यापतिक पदमे ठाम–ठाम हास्य रसक वर्णन देखबामे आबैत अछि, विशेषतया 'नचारी' एवं महेशवाणी गीतमे। एक टा उदाहरण द्रष्टव्य थिकः–

"नारद तुम्बरु मघँल गाबथि आओर कतन नारी।
कौतुके कोबर कौसले कामिनि सबे सब देअ गारि।।
भन विद्यापति गौरी–परिनय कौतुक कहि न जाए।
साप पुफपफकारे नारि पहाड़लि बसन ठामे नड़ाए।।"[15]

'महेशवाणी' गीतक एकटा दोसर उदाहरण द्रष्टव्य थिकः–

"दोसर विधि पड़िचाँ, चढ़ि बैसला हे जखने दिगम्बर आइ।
लाजक लेल गौरि नहि आबए, सखि सब गेलि पड़ाई।।
माइ हे, माड़ब मञो नहि जाएबे जहाँ बस उमत जमाइ
पएर धेअए खने दूध पिउल पफनि, हर लागलि तसु चोरी।
सबे सबतहु करताल बजाबए, मधुर हँसे हँस गोरि।"[16]

महाकवि विद्यापति हास्य गीत सभक रचना कएलन्हि अछि। एहि रसक गीत सभमे सर्वत्र शिष्ट हास्य दृष्टिगोचर होइत अछि।

(4) करुण रसः– एहि रसक स्थायी भाव थिक– शोक। भारतीय आचार्य लोकनि श्रृंगारक पश्चात करुणे–रसकैं सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानने छथि। आचार्य भवभूति 'करुण रस'कैं सभसँ महत्वपूर्ण रसक रूपमे स्वीकार कयने छथि। महाकवि विद्यापतिक गीतमे मरणजन्य शोकक चित्रण नहि देखबामे आबैत अछि मुदा अन्य प्रकारक गीतमे करुण रसक चित्रण कयल गेल अछि–

"हमसञो रुसल महेसे। गौरि विकल मन करथि उदेसे।

पुछिअ पथुक जन तोही। ए पथ देखल केहु बूढ़ बटोही।
आधैं विभूति अनूपे। कतेक कहब हुनि जोगिक सरुपे।
विद्यापति भन ताही। हर लए गौरी भेलि बताही।"[17]

(5) रौद्र रसः– रौद्र रसक स्थायी भाव थिक क्रोध। महाकवि विद्यापतिक किछु गीत विशेषतया शाक्त भावनाक गीतमे रौद्र–रसक वर्णन देखबामे आबैत अछि।

"क्रुद्ध–सुर–रिपु–बल–निपातिनि
महिष शुम्भ–निशुम्भ–घाति
भीत–भक्तक–भयापनोदन–पाटव–प्रबले
जय देवि दुर्गे दुरित–तारिणी
दुर्गमारि–विमर्द–कारिणी।"[18]

(6) भयानक रस :– भयानक रसक स्थायी भाव थिक – भय। डॉ॰ बासुकीनाथ झा अपन 'विद्यापति काव्यालोचन' नामक पोथीमे स्पष्ट कयने छथि जे हिनक गीतमे भयानक रसक स्फुट उदाहरण उपलब्ध नहि होइत अछि। शिवभक्ति सम्बन्धी किछु पदमे भयानकसँ पुष्ट भक्तिक उदाहरण प्राप्त होइत अछि। हिनक गोसाउनिक गीतक किछु अंशमे भयानक रसक सृष्टि देखबामे आबैत अछि जाहिमे महाकवि राक्षसकेँ भय प्रदान करयवाली हिनक रूपक वर्णन कयल अछि– "जय जय भैरवि असुर भयाउनि, पशुपति–भामिनी माया।"[19]

(7) वीभत्स रसः– वीभत्स रसक स्थायी भाव थिक – जुगुत्सा। डॉ॰ बासुकीनाथ झा अपन पोथीमे लिखने छथि जे पूर्णरूपसँ वीभत्स रसक निष्पत्ति विद्यापतिक कोनो पदमे वर्णित नहि अछि। मात्र एक पदमे वीभत्ससँ अनुप्राणित शिवक महिमाक प्रदर्शन करैत भक्तिक वर्णन भेल अछि–

आँखि निरर मुह चुअइ लार।
पथके चलत बौरा विसम्भार।।
बाट जाइते केहु हलव ढ़ेलि
अब ओहि बउरा विनु मञो अकेलि।।
हाथ डँवरु करु लौआ साँख,
जोग–जुगुति गिम भरल (लाख)"[20]

ओना किछु विद्वान हिनक 'गोसाउनिक गीत'मे सेहो एहि रसक आंशिक निर्वाह मानने छथि– "कट–कट विकट ओठ–पुट–पाँड़रि, लिधुर–फेन उठ फोका।"[21]

(8) अद्भुत रस :– अद्भुत रसक स्थायी भाव थिक – विस्मय। महाकवि विद्यापतिक शिवविषयक आ किछु शृंगारिक गीतमे अद्भुत रसक उपस्थापन देखबामे आबैत अछि–

"पंचवदन हर भसमे धवला। तीनि नयन एक बरए अनला।।
दुखे बोलए भवानी। जगत भिखारि मिलल हमर सामी।।
बिसधर भूखन, दिग परिधना। बिनु बिते ई सर नाम उगना।"[22]

एक टा शृंगारिक गीतक उदाहरण द्रष्टव्य थिक जाहिमे कविकेँ विस्मय होइत छनि–

कुचमण्डल–सिरि हेरि कनक–गिरि लाजे दिगन्तर गेल

तैओ अइसन कह, सेहो न जुगुति सह अचल सचल कैसे भेल।

माझ खीन तनु भरे भाधिँ जाए जनु विधि अनुसए भेल साजि।

नील पटोर आनि अतिसए सुदिढ जानि जतने सिरिजु रोमराजि।"[23]

(९) **शान्त–रस** :– एकर स्थायी भाव 'निर्वेद' अथवा 'शम' होइत अछि। हिनक विनय गीत वा भक्ति गीत सभमे एहि रसक आकर्षक अभिव्यंजना भेल अछि–

"दुल्लहि तोहर कतए छथि माए। कहुन्ह ओ आबथु एखन नहाए।।

बृथा बुझथु संसार बिलास। पल पल नाना भौतिक त्रास।

माए बाप जओ सदगति पाब। सन्तति काँ अनुपम सुख जाब।

विद्यापतिक आयु अवसान। कातिक धवल त्र्योदसि जान।"[24]

शान्त–रससँ समन्वित एक टा दोसर पद द्रष्टव्य थिक–

"तातल सैकत वारि–बिन्दु सम, सुत मित–रमनि–समाजे।

तोहि बिसारि मन ताहि समरपल, अब मझु होब कोन काजे।

माधव, हम परिनाम निरासा।

तोंहे जगतारन दीन दयामय, अतए तोहर विसबासा।।"[25]

एतय जीवनक अनुभवसँ संसारक निःस्सारता देखाओल गेल अछि संगहि जीवनक अन्त समयमे चिन्ता भेलासँ भगवानक प्रति आत्म–समर्पणक भाव अछि। रसक स्वरूप आनन्दात्मक होइत अछि। विद्यापतिक युगसँ बहुत पूर्व रस काव्यक आत्माक रूपमे प्रतिष्ठित भ' गेल छल। तेँ महाकवि विद्यापति ओही परम्पराक अनुसरण कयलनि आ विभिन्न रससँ सम्बन्धित गीतक रचना कयलनि।

संदर्भ :–

1. काव्य के तत्व, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलहाबाद, संस्करण 2003 ई., पृष्ठ संख्या–26
2. भविष्णु, लेखक–सम्पादक डॉ. रमण कुमार झा, शेखर प्रकाशन, पटना प्रथम संस्करण–2017 ई. पृष्ठ संख्या–16
3. तत्रैव, पृष्ठ–16
4. मैथिली काव्यशास्त्र – डॉ. दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी, पटना, द्वितीय संस्करण 2006 ई. पृष्ठ–96
5. तत्रैव, पृष्ठ–83
6. तत्रैव, पृष्ठ–83
7. तत्रैव, पृष्ठ–52
8. मैथिली काव्यशास्त्र – डॉ. दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी, पटना, द्वितीय संस्करण 2006 ई. पृष्ठ– 106
9. काव्य क तत्व, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण–2003 ई., पृष्ठ संख्या–29

(31)

...पति काव्यालोचन, प्रो॰ (डॉ॰) बासुकीनाथ झा मैथिली अकादमी, पटना (बिहार), द्वितीय संस्करण 2018 ई॰, पृष्ठ संख्या–141

विद्यापति की पदावली, संकलन : श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, संपादित : आचार्य राम लोचन शरण, पुस्तक भंडार पब्लिशिंग हाउस, पटना, पृष्ठ–43

12. तत्रैव, पृष्ठ–4
13. विद्यापति काव्यालोचन, प्रो॰ (डॉ॰) बासुकीनाथ झा मैथिली अकादमी, पटना (बिहार), द्वितीय संस्करण 2018 ई॰, पृष्ठ संख्या– 185
14. पौरुष ओ प्रतापक महाकवि विद्यापति आलेख रचनाकार–प्रो॰ (डॉ॰) देवकान्त झा, देसिल बयना, मैथिली साहित्य मंच, विद्यापति स्मृति गोष्ठी स्मारिका, नवम अर्घ्य हैदराबाद–सिकन्दराबाद, 25 नवम्बर, 2018, सम्पादक–चन्द्र मोहन कर्ण, पृष्ठ संख्या–28
15. विद्यापतिक गीतावली, सम्पादक–पं. श्री गोविन्द झा, मैथिली अकादमी, पटना, चतुर्थ संस्करण–2019 ई, पृष्ठ संख्या–13
16. तत्रैव, पृष्ठ–6
17. तत्रैव, पृष्ठ–13
18. तत्रैव, पृष्ठ–2
19. तत्रैव, पृष्ठ–1
20. तत्रैव, पृष्ठ–8
21. तत्रैव, पृष्ठ–1
22. तत्रैव, पृष्ठ–7
23. तत्रैव, पृष्ठ–22
24. विद्यापति की पदावली, संकलनः श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, संपादित–आचार्य रामलोचन शरण, पुस्तक भंडार पब्लिशिंग हाउस, पटना, पृष्ठ संख्या–144
25. तत्रैव, पृष्ठ–138